

لَنَسْأَلُوا الَّذِينَ شَفَعُوا مِنَّا تُجِبُونَ.  
وَمَا تَنْفَعُوا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللَّهَ يَوْمَ عَلِيمٌ (سورة آل عمران: 92)

# ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

Dr. Maulana Mohammad Najeeb Qasmi

[www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)



إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسْكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبِهِمْ وَفِي  
الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ. فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ.  
(سورة التوبة 60)

# ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस

डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी

[www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)

All rights reserved  
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

# ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat

By  
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी  
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>  
[najeebqasmi@gmail.com](mailto:najeebqasmi@gmail.com)  
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)  
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)  
Whatsapp: [00966508237446](https://www.whatsapp.com/channel/0029va833333333333333333)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:  
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India  
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

## विषय-सूची

	विषय	पेज नं
1	प्रस्तावना: मोहम्मद नजीब कासमी संभली	5
2	मुखबंध: हज़रत मौलाना अबुल क़सिम नोमानी	8
3	मुखबंध: मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी	9
4	मुखबंध: प्रोफेसर अख़तरुल वासे साहब	10
5	ज़कात के मसाइल	11
6	ज़कात के मानी	11
7	ज़कात का हुकुम	11
8	ज़कात की कब हुई	11
9	ज़कात के फवायद	12
10	ज़कात किस पर है	13
11	ज़कात का निसाब	13
12	ज़कात कितनी अदा करनी है	13
13	समाने तिजारत क्या क्या दाखिल है?	13
14	किस दिन की मालियत मोतबर होगी?	14
15	हर हर रुपये पर साल का गुज़रना ज़रूरी नहीं	14
16	ज़कात के हक़दार यानी ज़कात किस को अदा करें?	15
17	जिन लोगों को ज़कात देना जाएज़ नहीं है	15
18	ज़कात न निकालने पर वईद	16
19	ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद अलग मसाइल	17
20	सोने या चांदी के ज़ेवरात पर ज़कात	19
21	ज़मीन की पैदावार ज़कात यानी उशर	27
22	उशर के मानी	30

23	निसाबे उशर	31
24	उशर और ज़कात फर्क	31
25	बटाई की ज़मीन का उशर	32
26	कटाई का और उशर	32
27	मुतफर्रिक मसाइल	32
28	खेती की ज़कात के मुस्तहिक्कीन भी ज़कात के हकदार की तरह 8 हैं	33
29	अल्लाह हमसे हसन का मुतालबा करता है	34
30	हसन से क्या मुराद है	35
31	अल्लाह ने बन्दों की ज़रूरत करने को हसन से क्यों ताबीर किया?	36
32	हज़रत अबुल दहदा रज़ियल्लाहु अन्हु का वाक्या	37
33	हसन और अल्लाह के रास्ते करने की फज़ीलत	38
34	हसन और अल्लाह के रास्ता पसंदीदा खर्च करें	40
35	हसन या अल्लाह के रास्ते को बरबाद करने वाले असबाब	42
36	तंगदस्ती के वक़्त भी अल्लाह के रास्ते	43
37	लेखक का परिचय	47

## प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं त्क़ इस

अंतरिक्ष (जगह) को एसी ताकतें पुन कर दें जो इस्लाम और मुस्लिमानों के लिए नुकसानदेह साबित हों। चूनांचे 2013 में वेबसाइट ([www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)) लांच की गई, 2015 में तीन ज़बानों में दुनिया की पहली मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) और फिर दोस्तों के तक्राजा पर हाजियों के लिए तीन ज़बानों में ख़ासी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) लांच की गई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बहुत से उलमा ने दोनों ऐपस के लिए प्रशंसापत्र लिख कर अवाम व ख्वास से दोनों ऐपस से इस्तिफादा करने की दरखास्त की। यह प्रशंसापत्र दोनों ऐपस का हिस्सा हैं। ज़माने की रफ्तार से चलते हुए कुरान व हदीस की रौशनी में मुहत्तसर दीनी पैगाम ख़ुबसूरत इमेज की शकल में मुहत्तलिफ सूत्रों से हज़ारों दोस्तों को पहुंच रहे हैं जो अवाम व ख्वास में काफी मक़बूलियत हासिल किए हुए हैं।

इन दोनों ऐपस (**दीने इस्लाम और हज्जे मब्रूर**) को तीन ज़बानों में लांच करने के लिये मेरे तक़रीबन 200 मज़ामीन का अंग्रेज़ी और हिन्दी में तर्जुमा करवाया गया। तर्जुमा के साथ ज़बान के माहिरीन से एडिटिंग भी कराई गई। हिन्दी के तर्जुमा में इस बात का ख्याल रखा गया कि तर्जुमा आसान ज़बान में हो ताकि हर आम व खास के लिए इस्तिफादा करना आसान हो।

अल्लाह के फज़ल व करम और उसकी तौफ़ीक़ से अब तमाम मज़ामीन के अंग्रेज़ी और हिन्दी अनुवाद को विषय के एतेबार से किताबी शकल में तरतीब दे दिया गया है ताकि इस्तिफादा आम किया जा सके, जिसके ज़रिया 14 किताबें अंग्रेज़ी में और 14 किताबें हिन्दी में तय्यार हो गई हैं। उर्दू में प्रकाशित 7 किताबों के अलावा 10 नई किताबें छपने के लिए तय्यार कर दी गई हैं।

ज़कात इस्लाम के बुनियादी पांच अरकान में से एक रुकन है। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सैकड़ों आयात में ज़कात की अदाएगी का हुकम फरमाया है। हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने इरशादात में ज़कात की अदाएगी की ताकीद और उसकी अहमियत जिक्र फरमाई है। मौजू की अहमियत के पेशे नज़र ज़कात और अल्लाह के रास्ते में खर्च के कुल्लिलिक जरूरी मसाल इस किताब (ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस) में जमा कर दिए गए हैं।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मकबूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जगहों की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रात मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफ़ेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अकलियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.



(Mufti) Abul Qasim Nomani

Founder, (U.P.) Darul Uloom Deoband



مفتی: ابو القاسم نعمانی

مہتمم دارالعلوم دیوبند، الہند

PIN- 247554 (U.P.) INDIA Tel: 01336-222429, Fax: 01336-222768 E-mail: info@darululom-deoband.com

Ref. No. ....

Date: .....

باسمہ سبحانہ و تعالیٰ

جناب مولانا محمد نجیب قاسمی سنبلی تلمریض (سعودی عرب) نے دینی معلومات اور شرعی احکام کو زیادہ سے زیادہ اہل ایمان تک پہنچانے کے لئے جدید وسائل کا استعمال شروع کر کے دینی کام کرنے والوں کے لیے ایک اچھی مثال قائم فرمائی ہے۔ چنانچہ سعودی عرب سے شائع ہونے والے اردو اخبار (اردو نیوز) کے دینی کالم (روشنی) میں مختلف عنوانات پر ان کے مضامین مسلسل شائع ہوتے رہتے ہیں۔ اور سوشل میڈیا اور ویب سائٹ کے ذریعہ بھی وہ اپنا دینی پیغام زیادہ سے زیادہ لوگوں تک پہنچا رہے ہیں۔ ایک اچھا کام یہ ہوا ہے کہ زمانہ کی ضرورت کے تحت مولانا نے اپنے اہم اور منتخب مضامین کے ہندی اور انگریزی میں ترجمے کرا دیے ہیں، جو ایلیٹرو تک بک کی شکل میں جلدی لانچ ہونے والے ہیں۔

اور امید ہے کہ مستقبل میں یہ پرنٹ بک کی شکل میں بھی دستیاب ہوں گے۔ اللہ تعالیٰ مولانا قاسمی کے علوم میں برکت عطا فرمائے اور ان کی خدمات کو قبول فرمائے۔ حریطی افادات کی توہین بخشے۔

اردو دارالعلوم دیوبند

ابو القاسم نعمانی غفرلہ

مہتمم دارالعلوم دیوبند

۵۱۳۷۱۶۳

مولانا محمد اسرار الحق  
Mohammad Asrarul Haque  
Member of Parliament  
(Lok Sabha)



TE, South Avenue, New Delhi, 110011  
Ph: 811-03790046 Telefax: 811-03296314  
E-mail: mhaqqasmi@gmail.com

Date: 19/03/2016

Date: 19/03/2016

### تائیدات

عصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلات و وسائل کے زیرِ ماموریت لانا سبک چھوڑنا وقت کا اہم تکلف ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی و معاشرتی اور اصلاحی تحریروں نے اس سمت میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے سبب آج انٹرنیٹ پر دین کے حقائق سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و اعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غزvam یا انڈیہ انڈیا قومی صاحب کا نام سر پرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ و سادہ سوال جواب دیتے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی و اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔

انڈیہ انڈیا قومی صاحب کا قومی کا قلمبر رواں دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سے بخوبی واقف ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد و دیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ مصروف کی خصوصیت علوم دینی کے ساتھ علوم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، دوسری طرف دانشور و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ خالص و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی و اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عام لوگوں کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک ہا کے مستحق ہیں۔ ان کی شب و روز کی مصروفیات و جدوجہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی و اصلاحی اور ملی کام لے اور وہ ان کے لئے کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

کلمہ



(مولانا) محمد اسرار الحق قومی

الممبر فی لوک سبھا (انڈیا)

صدر آل انڈیا تعلیمی و ملی فاؤنڈیشن نئی دہلی

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अरुणसुख दास

आयुर्वेद

**PROF. AKHTARUL WASEY**  
Commissioner



भाषागत अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic  
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs  
Government of India

تقریر

اطلاعاتی انقلاب بڑھانے کے بعد جس طرح ہم کی معلومات اور تحریک کے درجہ انھوں کی دیکھیں شہادت میں ہیں۔ اس سے انکار  
میں ہرگز نہ ہوگا۔ "کڑے میں رہا" کے لفظی معنی تھوڑے سے صرف حقیقت اور بڑے سے بڑے کھانا اور دھواں اور جڑے جڑے کھانا ہوتا ہے۔ کھان  
(Google) اور ایک ویکی پیڈیا (Wikipedia) یا دیگر دوسری سوشل سائنس ایپس نے تھوڑے اوقات کا دورہ کیا اور دیکھا کہ ان کے لفظ  
کے لیے کتنے قرائن حاصل کے تمام سوالات سے متعلق ہو کر رہ گئے ہیں۔ لیکن اس اعلیٰ معیار کے انقلاب نے ایک عجیب و غریب چیز کو جنم دیا ہے کہ ایسے حالات  
روشنی اور غور سے دیکھ کر ان کی حقیقت سے گرجاں کو کاٹنے کا عجیب و غریب طریقہ شامل ہو گیا ہے۔ اور اس سچائی کی اطلاع دوسرے ممالک سے  
ہو کر پھیلی ہوئی ہے۔ دوسرا انھیں مسئلہ ہے کہ باوجود ہونے اور مصروفیت حاصل کرنے کے لیے اس طرح کی خدمات لوگوں میں خاص کم ہوتی ہے  
ہو جائے۔ کیونکہ وہ نیک کے بعد میں سائنس کی علمی سچائی اور حقیقی سے بھرپور دہش کو کھانے کے درجہ پر جاننا چاہتے ہیں۔ اس سچائی اور سچے کے  
مل کے لئے ضروری ہے کہ ہم خود ہی اپنی اس حقیقت کو جاننا چاہیں کہ ان کے لئے اور اپنے تمام دیکھوں میں خاص طور پر جس کی سب سے پہلی بات فراہم  
کرنے والے ہیں۔ مثلاً، اپنے شعور میں باقی کی ہر حقیقت لانے کے لئے اس اطلاع کے انقلاب کے جتنے بھی وسائل اور ذرائع ہیں ان کا  
ہر استعمال کریں۔

[illegible]

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عیشی کے احوال یہ بھی ہیں

احمد علی  
(پروفیسر انجمن اسلامیہ)

سابقہ انگریزوں کے زیرِ قیادت مسلمانوں نے جو کام کیے ہیں،  
سابقہ صدر شاہجہان علی خان نے جو کام کیے ہیں، وہی  
سابقہ افسر محمد علی خان نے بھی کیا ہے۔

## ज़कात के मसाइल

### ज़कात के मानी

ज़कात के मानी पाकीज़गी, बढ़ौतरी और बरकत के हैं। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "उनके माल से ज़कात लो ताकि उनको पाक करे और बाबरकत करे उसकी वजह से और दुआ दे उनको।" (सूरह तौबा 103) शरई इस्तेलाह में माल के उस खास हिस्से को ज़कात कहते हैं जिसको अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक फकीरों, मोहताजों वगैरह को देकर उन्हें मालिक बना दिया जाए

### ज़कात का हुकुम

ज़कात देना फर्ज़ है, कुक़ान करीम की आयात और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात से इसकी फर्ज़ियत साबित है। जो शख्स ज़कात के फर्ज़ होने का इंकार करे वह काफिर<sup>१</sup> है

### ज़कात की फर्ज़ियत कब हुई

ज़कात की फर्ज़ियत इब्तिदाए इस्लाम में ही मक्का के अंदर नाज़िल हो चुकी थी जैसा कि इमाम तफसीर इब्ने कसीर ने सूरह मुज़ज़म्मिल की आयत से इस्तिदाला फरमाया है। क्योंकि यह सूरत मक्की है और बिल्कुल इब्तिदाए वही के ज़माने की सूरतों में से है, अलबत्ता अहादीस से मालूम होता है कि इब्तिदाए इस्लाम में ज़कात के लिए कोई खास निसाब या खास मिक़दार मुकर्रर न थी बल्कि जो कुछ एक मुसलमान की अपनी ज़रूरत से बच जाता उसका एक बड़ा

हिस्सा अल्लाह की राह में खर्च किया जाता था। निसाब का तअय्युन और ज़कात की मिक़दार का बयान मदीना में हिजरत के बाद हुआ।

## ज़कात के फवायद

ज़कात एक इबादत है, अल्लाह का हुकुम है, ज़कात निकालने से हमें कोई मंफअत हासिल हो या न हो, कोई फायदा मिले या न मिले, अल्लाह के हुकुम की इताअत बज़ाते खुद मक़सूद है, असल मक़सद तो ज़कात का यह है, लेकिन अल्लाह का करम है जो कोई बन्दा ज़कात निकालता है तो अल्लाह उसको दुनियावी फवायद भी अता फरमाते हैं, उन फवायद में से यह भी है कि ज़कात की अदापैग बाकी माल में बरकत, इज़ाफा और पाकीज़गी का सबब बनती है।

चुनांचे कुरान करीम (सूरह बक्रह 276) में अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "अल्लाह सूद को मिटाता है और ज़कात और सदक़ात को बढ़ाता है।"

एक हदीस में ुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब कोई बन्दा ज़कात निकालता है तो फरिशते उसके हक़ में दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! जो शख्स अल्लाह के रास्ते में खर्च कर रहा है उसको और ज़्यादा अता फरमा और ऐ अल्लाह! जिस शख्स ने अपने माल को रोक कर रखा है और ज़कात अदा नहीं कर रहा है तो ऐ अल्लाह उसके माल पर हलाकत डाले।

एक हदीस में ुहूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कोई सदक़ा किसी माल में कमी नहीं करता है।

All rights reserved  
सभी अधिकार लेखक के लिये सुरक्षित हैं

# ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस Guidance Regarding Zakat & Sadaqaat

By  
डाक्टर मौलाना मोहम्मद नजीब कासमी  
Dr. Mohammad Najeeb Qasmi

<http://www.najeebqasmi.com/>  
[najeebqasmi@gmail.com](mailto:najeebqasmi@gmail.com)  
[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)  
[Najeeb Qasmi - YouTube](#)  
Whatsapp: [00966508237446](https://www.whatsapp.com/channel/0029va833333333333333333)

पहला हिंदी संस्करण: मार्च 2016

Address for Gratis Distribution मुफ्त मिलने का पता:  
Dr. Mohammad Mujeeb, Deepa Sarai, Sambhal, UP (2044302) India  
डा. मोहम्मद मुजीब, दीपा सराय, सभल, यूपी, इण्डिया (244302)

प्लाट खरीद लेते हैं और शुद्ध ही से यह नियत होती है कि जब अच्छे पैसे मिलेंगे तो उसको बेच करके उससे नफा कमाएंगे, तो उस प्लाट की मालियत पर भी ज़कात वाजिब है। लेकिन प्लाट इस नियत से खरीदा कि अगर मौका हुआ तो उस पर रिहाइश के लिए मकान बनवा लेंगे या मौका होगा तो उसको किराया पर चढ़ा देंगे या कभी मौका होगा तो उसको बेच देंगे, यानी कोई वाज़ेह नियत नहीं है बल्कि वैसे ही खरीद लिया तो इस सूरत में इस प्लाट की कीमत पर ज़कात वाजिब नहीं है।

### किस दिन की मालियत मोतबर होगी?

ज़कात की अदाएगी के लिए उस दिन की कीमत का एतेबार होगा जिस दिन आप ज़कात की अदाएगी के लिए अपने माल का हिसाब लगा रहे हैं।

### हर हर रुपये पर साल का गुज़रना ज़रूरी नहीं

एक साल माल पर गुज़र जाए इसका मतलब यह नहीं कि हर साल हर हर रुपये पर मुस्तक़िल साल गुज़रे, यानी गुज़श्ता साल रमज़ान में अगर आप 5 लाख रुपये के मालिक थे जिस पर एक साल भी गुज़र गया था, ज़कात अदा कर दी गई थी, इस साल रमज़ान तक जो रकम आती जाती रही उस का कोई एतेबार नहीं, बस इस रमज़ान में देख लो कि तुम्हारे पास अब कितनी रकम ज़रूरियात से बच गई है और उस रकम पर ज़कात अदा कर दो, मसलन इस रमज़ान में छः लाख रुपये आपके पास ज़रूरियात से बच गए तो छ लाख का 2.5% ज़कात अदा कर दो।

## ज़कात के हक़दार यानी ज़कात किस को अदा करें?

अल्लाह तआला ने सूरह तौबा आयत 60 में 8 तरह के आदमियों को ज़कात का हक़दार बताया है।

- 1) फ़कीर यानी वह शख्स जिसके पास कुछ थोड़ा माल व असबाब है, लेकिन निसाब के बराबर नहीं।
- 2) मिसकीन यानी वह शख्स जिसके पास कुछ भी न हो।
- 3) जो लोग ज़कात वसूल करने पर मुतअय्यन हैं।
- 4) जिनकी दिलजोई करना मंज़ूर हो।
- 5) वह गुलाम जिसकी आज़ादी मतलूब हो।
- 6) कर्ज़दार यानी वह शख्स जिसके ज़िम्मे लोगों का कर्ज़ हो और उसके पास कर्ज़ से बचा हुआ बक़दरे निसाब कोई माल न हो।
- 7) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला।
- 8) मुसाफ़िर जो हालते सफ़र में तंगदस्त हो गया हो।

**वज़ाहत** - इस आयत में अगरचे सदका का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है, मगर कुरान करीम की दूसरी आयात व नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल की रौशनी में मुफ़स्सेरीन ने लिखा है कि यहां सदका से मुराद ज़कात है।

## जिन लोगों को ज़कात देना जाएज़ नहीं है

- 1) उस शख्स को जिसके पास ज़रूरियाते असलिया से ज़ायद बक़दरे निसाब माल मौजूद है।



2) सैयद और बनी हाशिम, बनी हाशिम से हज़रत हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब, हज़रत जाफर, हज़रत अक़ील, हज़रत अब्बास और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हुम की औलाद मुराद है।

3) अपने मां, बाप, दादा, दादी, नाना, नानी को ज़कात देना जाएज़ नहीं है।

4) अपने बेटे, बेटी, पोता, पोती, नवासा, नवासी को ज़कात देना जाएज़ नहीं है।

5) शौहर अपनी बीवी को और बीवी अपने शौहर को ज़कात नहीं दे सकती है।

6) काफिर को ज़कात नहीं दी जा सकती है।

**नोट -** भाई, बहन, भतीजा, भतीजी, भांजा, चाचा, फूफी, खाला, मामू, सास, ससुर, दामाद वगैरह में से जो हाज़तमंद और मुस्तहिक ज़कात हों उन्हें ज़कात देने में दोहरा सवाब मिलता है, एक सवाब ज़कात का और दूसरा सिला रहमी का। किसी तोहफा या हदया के उनवान से भी इन मज़कूर रिशतेदार को ज़कात दी जा सकती है।

## ज़कात न निकालने पर वईद

सूरह तौबा आयत 34-35 में अल्लाह तआला ने उन लोगों के लिए बड़ी सख्त वईद बयान फरमाई है जो अपने माल की ज़कात नहीं निकालते। उनके लिए बड़े सख्त अल्फाज़ में खबर दी है, ज़ुच्चांचे फरमाया कि जो लोग अपने पास सोना चांदी जमा करते हैं और उसको अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते तो (ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) आप उनको एक दर्दनाक अज़ाब की खबर दे दीजिए, यानी जो लोग अपना पैसा रुपया अपना सोना चांदी जमा

करते जा रहे हैं और उनको अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते उन पर अल्लाह ने जो फरीज़ा आयद किया है उसको अदा नहीं करते, उनको खुशखबरी सुना दीजिए कि एक दर्दनाक अज़ाब उनका इंतज़ार कर रहा है।

फिर दूसरी आयत में उस दर्दनाक अज़ाब की तफ़सील ज़िक्र फरमाई कि यह दर्दनाक अज़ाब उस दिन होगा जिस दिन सोने और चांदीको आग में तपाया जाएगा और फिर उस आदमी की पेशानी, उसके पहलू और उसकी पुशत को दागा जाएगा और उससे यह कहा जाएगा कि यह है वह खज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया था, आज तुम खज़ाने का मज़ा चखो जो तुम अपने लिए जमा कर रहे थे। अल्लाह तआला हम सबको इस अंजामे बद से महफूज़ फरमाए, आमीन।

एक हदीस में नबी अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब माल में ज़कात की रक़म शामिल हो जाए यानी पूरी ज़कात नहीं निकाली बल्कि कुछ ज़कात निकाली और कुछ रह गई तो वह माल इंसान के लिए तबाही और हलाकत का सबब है, लिहाज़ा इस बात का एहतेमाम करो कि एक एक पाई का सही हिसाब करके ज़कात अदा करो।

### **ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद अलग मसाइल**

ज़कात जिसको दी जाए उसे यह बताना कि यह माल ज़कात है ज़रूरी नहीं बल्कि किसी गरीब के बच्चों को ईदी या किसी और नाम से दे देना भी काफी है।

दीनी मदारिस में गरीब तालिब इल्म के लिए ज़कात देना जाएज़ है।

ज़कात की रक़म मसजिद, मदारिस, अस्पताल, यतीमखाने और मुसाफिर खाने की तामीर में खर्च करना जाएज़ नहीं है।

अगर औरत भी साहबे निसाब है तो उसपर भी ज़कात फर्ज़ है, अलबत्ता शौहर खुद ही औरत की तरफ से भी ज़कात की अदाएगी अपने माल से कर दे तो ज़कात अदा हो जाएगी।

## सोने या चांदी के ज़ेवरात पर ज़कात

हज़रत उमर फारूक, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर बिन अलआस रज़ियल्लाहु अन्हुम इसी तरह मशहूर व मारुफ ताबेईन हज़रत सईद बिन जुबैर, हज़रत अता, हज़रत मुजाहिद, हज़रत इब्ने सीरीन, इमाम जुहरी, इमाम सौरी, इमाम औज़ाई और इमाम अबू हनीफा रहमतुल्लाह अलैहिम कुरान व सुन्नत की रौशनी में औरतों के सोने या चांदी के इस्तेमाली ज़ेवर पर वजूब ज़कात के कायल हैं अगर वह ज़ेवर निसाब के बराबर या ज़ायद हो और उस पर एक साल भी गुज़र गया हो, जिसके मुख्तलिफ़ दलाइल पेश किए जाते हैं।

1) कुरान व सुन्नत के वह उमूमी हुकुम जिनमें सोने या चांदी पर बेगैर किसी (इस्तेमाली या गैर इस्तेमाली) शर्त के ज़कात वाजिब होने का ज़िक्र है और इन आयात व अहादीसे शरीफा में ज़कात के अदाएगी में कोताही करने पर सख्त तरीन वर्इदें वारिद हुई हैं। बहुत सी आयात व अहादीस में यह उमूम मिलता है, इख्तिसार की वजह से सिर्फ़ एक आयत और एक हदीस पर इकतिफा करता हूँ

“जो लोग सोना या चांदी जमा करके रखते हैं और उनको अल्लाहकी राह में खर्च नहीं करते (यानी ज़कात नहीं निकालते) सो आप उनको एक बड़े दर्दनाक अज़ाब की खबर सुना दीजिए जो कि उस रोज़ वाक़े होगी कि उन (सोना व चांदी) को दोज़ख की आग में तपाया जाशा फिर उनसे लोगों की पेशानियाँ और उनकी करवटों और उनकी पुश्तों को दाग दिया जाएगा और यह जतलाया जाएगा कि यह वह है

जिसको तुम अपने वास्ते जमा करके रखते थे, सो अब अपने जमा करने का मजा चखो।" (सूरह तौबा 34, 35)

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिस माल की ज़कात अदा कर दी जाए वह "कनज़तुम" (जमा किए हुए) में दाखिल नहीं है। (अबू दाऊद, मुसनद अहमद) गरज़ ये कि जिस सोने व चांदी की ज़कात अदा नहीं की जाती कल क़यामत के दिन वह सोना व चांदी जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर उससे उनकी पेशानियों, पहलुओं और पुश्तों का दागा जाएगा। अल्लाह तआला हम सबको तमाम माल और सोने व चांदी के ज़ेवरात पर ज़कात की अदाएगी करने वाला बनाए ताकि इस दर्दनाक अज़ाब से हमारी हिफाज़त हो जाए (आमीन)।

अबू हुदैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कोई शख्स जो सोने या चांदी का मालिक हो और उसका हक़ (यानी ज़कात) अदा न करे तो कल क़यामत के दिन उस सोने व चांदी के पतरे बनाए जाएंगे और उनको जहन्नम की आग में ऐसा तपाया जाएगा गोया कि वह खुद आग के पतरे हैं, फिर उससे उस शख्स का पहलू, पेशानी और कमर दाग दी जाएगी और क़यामत के पूरे दिन मैं जिस की मिक़दार पचास हज़ार साल होगी बार बार इसी तरह तपा तपा कर दाग दिए जाते रहेंगे यहां तक कि उनके लिए जन्नत या जहन्नम का फैसला हो जाए।

इस आयत और हदीस में आम तौर पर सोने या चांदी पर ज़कात की अदाएंगी न करने पर दर्दनाक अज़ाब की ख़बर दी गई है चाहे वह इस्तेमाली ज़ेवर हों या तिजारती सोना व चांदी। गरज़ ये कि कुरान करीम में किसी एक जगह भी इस्तेमाली ज़ेवर का इस्तिस्ना नहीं किया गया है।

2) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक औरत नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुई, उसके साथ उसकी बेटी थी जो दो सोने के भारी कंगन पहने हुए थी। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस औरत से कहा कि क्या तुम इसकी ज़कात अदा करती हो? उस औरत ने कहा नहीं, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम चाहती हो कि अल्लाह तआला इनकी वजह से कल क़यामत के दिन आग के कंगन तुम्हें पहनाए, तो उस औरत ने वह दोनों कंगन उतार कर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए पेश कर दिए। (अबू दाऊद, मुसनद अहमद, तिर्मिज़ी, दारे कुत्नी) शारेह मुस्लिम इमाम नववी और शैख नासिरुद्दीन अलबानी ने इस हदीस को सही करार दिया है।

3) हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ लाए और मेरे हाथ में छल्ला देख कर मुझसे कहा कि ऐ आइशा! यह क्या है? मैंने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! यह मैंने आपके लिए ज़ीनत हासिल करने की

गरज़ से बनवाया है, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहा क्या तुम इसकी ज़कात अदा करती हो? मैंने कहा नहीं, नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया तो फिर यह तुम्हें जहन्नम में ले जाने के लिए काफी है। (अबू दाऊद जिल्द 1 पेज 244, दारे कुतनी)

मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने हदीस को सही करार दिया है। इमाम खत्ताबी ने (मआलिमुस सुनन जिल्द 3 पेज 176) में ज़िक्र किया है कि गालिब गुमान यह है कि छल्ला तन्हा निसाब को नहीं पहुंचता है, इसके मानी यह हैं कि इस छल्ले को बूरे ज़ेवरात में शामिल किया जाए, निसाब को पहुंचने पर ज़कात की अदाएगी करनी होगी। इमाम सुफयान सौरी ने भी यही तौजीह ज़िक्र की है।

4) हज़रत असमा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि मैं और मेरी खाला नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुईं, हमने सोने के कंगन पहन रखे थे, तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम इसकी ज़कात अदा करती हो? हमने कहा नहीं। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या तुम डरती नहीं कि कल क्रयामत के दिन अल्लाह तआला इनकी वजह से आग के कंगन तुम्हें पहनाए? लिहाज़ा इनकी ज़कात अदा करो। (मुसनद अहमद) मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने हदीस को सही करार दिया है। बहुत सी अहादीस में ज़ेवरात के वाजिब होने का ज़िक्र है, यहां तियालत से बचने के लिए सिर्फ तीन अहादीस ज़िक्र की गई हैं।

इस्तेमाली ज़ेवर में ज़कात वाजिब न करार देने वाला उम्मत मुस्लिमा का दूसरा मक़तबे फ़िक्क उम्मून दो दलीलें पेश करता है।

1) अक्ली दलील - अल्लाह तआला ने उसी माल में ज़कात को वाजिब करार दिया है जिसमें बढ़ोतरी की गुनजाइश हो, जबकि सोने और चांदी के ज़ेवरात में बढ़ोतरी नहीं होती है। हालांकि हक्कीतन ज़ेवरात में भी बढ़ोतरी होती है, ज़ुब्बांचे सोने की कीमत के साथ ज़ेवरात की कीमत में भी इज़ाफा होता है, आज कल तो तिजारतसे ज़्यादा मार्जिन (Margin) सोने में मौजूद है।

2) चंद अहादीस व आसारे सहाबा - वह सबके सब ज़ईफ़ हैं जैसाकि शैख नासिरुद्दीन ने अपनी किताब (अरवाउल गलील) में दलाइल के साथ लिखा है।

बर्रे सगीर के जमहूर उलमाए किराम ने कुरान व हदीस की रौशनी में यही लिखा है कि इस्तेमाली ज़ेवरात में निसाब को पहुंचने पर ज़कात वाजिब है। सउदी अरब के साबिक मुफ़्ती आम शैख अब्दुल अज़ीज़ बिन बाज़ की भी कुरान व सुन्नत की रौशनी में यही राय है कि इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात वाजिब है।

**(उसूली बात)** मौजूए बहस मसअला में उम्मत मुस्लिमा ज़मानए कदीम से दो मक़ातिबे फ़िक्क में मुत्ताकसिम हो गई है, हर मक़तबे फ़िक्क ने अपने मौक़िफ की ताईद के लिए अहादीसे नबविया से ज़रूर सहारा लिया है, लेकिन इस हक्कीकत का कोई इन्कार नहीं कर सकता कि कुरान करीम में जहां कहीं भी सोने या चांदी पर ज़कात की अदाएगी न करने पर सख़्त वर्इदें वारिद हुई हैं किसी एक जगह भी इस्तेमाली या तिजारती सोने में कोई फ़र्क़ नहीं किया गया है, नज़



इस्तेमाली ज़ेवर को ज़कात से मुस्तसना करने के लिए कोई गैर क़ाबिले नक़द व जरह हदीस के ज़खीरे में नहीं मिलती है, बल्कि बाज़ अहादीस सहीहा इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात वाजिब होने की वाज़ेह तौर पर रहनुमाई कर रही है। शैख नासिरुद्दीन अलबानी जैसे मुहद्दिस ने भी इनमें बाज़ अहादीस को सही तसलीम किया है, नीज़ इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात के वाजिब करार देने के लिए अगर कोई हदीस न भी हो तो कुरान करीम के उमूमी हुकुम की रौशनी में हमें हर तरह के सोने व चांदी पर ज़कात अदा करनी चाहिए चाहे इसका तअल्लुक इस्तेमाल से हो या नहीं, ताकि कल क़यामत के दिन रुसवाई, ज़िल्लत और दर्दनाक अज़ाब से बच सकें । नीज़ इस्तेमाली ज़ेवर पर ज़कात के वाजिब करार देने में गरीबों, मिसकीनों, स्त्रीमों और बेवाओं का फायदा है, ताकि चंद घरों में न सिमटे बल्कि हम अपने मुआशरे को इस रक़म से बेहतर बनाने में मदद हासिल करें।

**(एहतियात)** वह मज़कूरा बाला अहादीस जिनमें नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्तेमाली ज़ेवर पर भी वुजूबे ज़कात का हुकुम दिया है उनके सही होने पर मुहद्दिसीन की एक जमाअत मुत्तफ़िक़ हैं, अलबत्ता बाज़ मुहद्दिसीन ने सनदे हदीस में ज़ोफ़ का इकरार किया है। लेकिन एहतियात इसी में है कि हम इस्तेमाली ज़ेवर पर भी ज़कात की अदाएंगी करें, ताकि ज़कात की अदाएंगी न करने पर कुरान व हदीस में जो सख़्त तरीन वर्डें आई हैं उनसे हमारी हिफ़ाज़त हो सके, नीज़ हमारे माल में पाकीज़गी के स्था उसमें बढ़ोतरी उसी वक़्त पैदा होगी जब हम ज़कात की पूरी अदाएंगी करेंगे, क्योंकि ज़कात की पूरी अदाएंगी न करने पर माल की

## प्रस्तावना

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम न सिर्फ आखरी नबी हैं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रिसालत अंतरराष्ट्रीय भी है, यानी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कबिला कुरैश या अरबों के लिए नहीं बल्कि पुरी दुनिया के लिए, इसी तरह सिर्फ उस ज़माना के लिए नहीं जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए बल्कि क्रियामत तक आने वाले तमाम इंसान व जिन्नात के लिए नबी व रसूल बना कर भेजे गए। कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा खास कर उलमा-ए-दीन की जिम्मेदारी है कि हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बाद दीने इस्लाम की हिफाज़त करके कुरान व हदीस के पैगाम को दुनिया के कोने कोने तक पहुंचाएँ। चूनांचे उलमा-ए-कराम ने अपने अपने ज़माने में मुख्तलिफ़ तरीकों से इस जिम्मेदारी को अंजाम दिया। उलमा-ए-कराम की कुरान व हदीस की खिदमात को भुलाया नहीं जा सकता है और इंशा अल्लाह उलमा-ए-कराम की इल्मी खिदमात से कल क्रियामत तक इस्तिफादा किया जाता रहेगा। अब नई टेक्नोलॉजी (वेबसाइट, वाट्स ऐप, मोबाइल ऐप, फेसबुक और यूट्यूब वगैरह) को दीने इस्लाम की खिदमात के लिए उलमा-ए-कराम ने इस्तेमाल करना शुरू तो कर दिया है मगर इसमें मज़ीद काम करने की सख्त ज़रूरत है।

अलहमदु लिल्लाह बाज़ दोस्तों की टेक्निकल समर्थन और बाज़ मुहसिनीन के माली योगदान से हमने भी दीने इस्लाम की खिदमात के लिए नई टेक्नोलॉजी के मैदान में छोड़े दौड़ा दिए हैं क़इस

डायमान्ड पर ज़कात वाजिब न होने पर उम्मत मुस्लिमा मुत्तफिक हैं, क्योंकि शरीअते इस्लामिया ने इसको कीमती पत्थरों में ग़ुशार किया है। हां अगर यह तिजारत की गरज़ के लिए हों तो फिर निसाब के बराबर या ज़्यादा होने की सूरत में ज़कात वाजिब होगी।

अगर किसी शख्स के पास सोने या चांदी के अलावा नक़दी या बैंक बैलेंस भी है तो उन पर भी ज़कात अदा करनी होगी, अलबत्ता ये बुनियादी शर्त हैं:

- 1) निसाब के बराबर या ज़ायद हो।
- 2) एक साल गुज़र गया हो।

## ज़मीन की पैदावार में ज़कात यानी उशर

खालिके कायनात की नेमतों में से एक बड़ी नेमत ज़मीन की तखलीक है जिसमें अल्लाह तआला के हुकुम से बेशुमार अनाज, फल फूल, सब्जियां और तरह तरह की नबातात पैदा होती हैं जिनके बौर इंसान ज़िन्दा नहीं रह सकता। यह महज़ अल्लाह तआला का फज़ल व करम व एहसान है कि उसने ज़मीन को इंसान के ताबे बना दिया और उसमें क़यामत तक आने वाले तमाम इंसानों की रोज़ी का अज़ीम ज़खीरा जमा कर दिया।

अल्लाह तआला ने मिट्टी को पैदावार के क़ाबिल बनाया और पैदावार के उगने और उसके नश व नुमा के लिए बादलों से पानी बरसा कर, पहाड़ों से चशमे बहा कर और ज़मीन के अंदर पानी के ज़खीरे रख कर वाफिर मिक्दार में पानी पैदा कर दिया, नीज़ हवा के इज़्लाम के साथ रौशनी व गर्मी का खास नज़्म किया ताकि ताम इंसान व जिन्नात और जानदार ज़मीन की पैदावार से भरपूर फायदा उठाकर ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारते रहें।

यकीनन ज़मीन व आसमान के पैदा करने वाले ही ने ज़मीन से पैदावारी का यह सारा इंतेज़ाम किया है। अल्लाह तआला कुरान करीम में इरशाद फरमाता है **अच्छा यह बताओ कि जो कुछ तुम ज़मीन में बोते हो, क्या उसे तुम उगाते हो या उगाने वाले हम हैं।**" (सूरह वाक़्या 63) यानी तुम्हारा काम बस इतना ही तो है कि तुम ज़मीन में बीज डाल दो और मेहनत करो, इस बीज को परवान चढ़ा कर कोपल की शकल देना और इसे दरख़त या पौदा बना देना और

इसमें तुम्हारे फायदे के फल या गल्ले पैदा करना क्या तुम्हारे अपने बस में था? अल्लाह तआला के सिवा कौन है जो तुम्हारे डाले हुए बीज को यहां तक पहुंचा देता है।

यकीनी तौर पर ज़मीन की पैदावार का हर हर दाना अल्लाह तआला की अज़ीम नेमत है और हकीकी पैदा करने वाला अल्लाह तआला ही है, इंसान तो अल्लाह की अज़ीम नेमतों (मिट्टी को पैदावार के काबिल बनाना, हवा, गर्मी व सर्दी और रौशनी का इंतज़ाम वगैरह) से फायदा उठाए बेगैर ए तिनका भी ज़मीन से नहीं उगा सकता, इस अज़ीम नेमत पर हर शख्स को अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि अल्लाह तआला ने इस ज़मीन से हमारे लिए उम्दा उम्दा गिज़ाओं का इंतज़ाम किया। शरीअते इस्लामिया ने इज़हारे तशक्कुर का यह तरीका बताया है कि ज़मीन की हर पैदावार पर उशर या निस्फ उशर (दसवां या बीसवां हिस्सा) यानी दस या पांच फीसद ज़कात निकालें ताकि गरीब और मोहताजों की ज़रूरतों की तकमिल हो सके।

पैदावार की ज़कात के मुतअल्लिक अल्लाह तआला कुरान करीम में इरशाद फरमाता है "अल्लाह वह है जिसने बागात पैदा किए जिनमें से कुछ (बेलदार हैं जो) सहारों से ऊपर चढ़ाए जाते हैं औरु छ सहारों के बेगैर बुलंद होते हैं और नखलिस्तान और खेतियां पैदा कीं, जिनके ज़ायके अलग अलग हैं और ज़ैतून और अनार पैदा किए जो एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और एक दूसरे से मुख्तलिफ भी। जब यह दरखत फल दे तो उनके फलों को खाने में इस्तेमाल करो

और जब उनकी कटाई का दिन आए तो अल्लाह का हक़ अदा करो और फुज़ूलखर्ची न करो। याद रखो वह फुज़ूलखर्च लोगों को पसंद नहीं करता।" (सूरह अनआम 141)

इसी तरह अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "ऐ ईमान वाले जो कुछ तुमने कमाया हो और जो पैदावार हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली हो उसकी अच्छी चीज़ों का एक हिस्सा (अल्लाह के रास्ते में) खर्च किया करो और यह नियत न रखो कि बस ऐसी खराब किस्म की चीज़ें (अल्लाह के नाम पर) दिया करोगे जो (अगर बेई दूसरा तुम्हें दे तो नफरत के मारे) तुम उसे आंखें मीचे बेगैर न ले सको। और याद रखो कि अल्लाह बेनियाज़ है और काबिले तारीफ़ है।" (सूरह बक्रह 267)

कुरान करीम के पहले मुफस्सिरे अव्वल हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो ज़मीन दरया और बादल से सींची जाए उसकी पैदावार का दसवां हिस्सा और जो ज़मीन कुएं से सींची जाए उसकी पैदावार का बीसवां हिस्सा (ज़कात के तौर पर निकाला जाए)।

क़यामत तक आने वाली सारी इंसानियत के नबी हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो ज़मीन आसमान, चशमा और तालाब के पानी से सींची जाए उसकी पैदावार का दसवां हिस्सा और जो ज़मीन में डोल या रहट के ज़रिया सींची जाए उसकी पैदावार का बीसवां हिस्सा (ज़कात के तौर पर निकाला जाए)।

कुरान व हदीस की रौशनी में उम्मत मुस्लिमा का इत्तिफाक़ है कि ज़मीन की पैदावार पर दसवां या बीसवां हिस्सा (दस या पांच फीसद)

ज़कात में देना ज़रूरी है अगरचे इसकी तफसीलात में कुछ इख़तेलाफ़ हैं। (बदाये सनाये) शैख़ इब्ने कुदामा ने अपनी किताब "अलमुगनी" में लिखा है कि ज़मीन की पैदावार में ज़कात के वुजूब के सिलसिले में उम्मत मुस्लिमा के दरमियान कोई इख़्तिलाफ़ ही नहीं है।

### उशर के मानी

उशर के असल मानी दसवें हिस्से के हैं, लेकिन भूअक़रम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पैदावार की ज़कात के मुतअल्लिक़ जो तफसीर बयान फरमाई है उसमें ज़मीन की दो किस्में करार दी हैं।

1) अगर ज़मीन बारानी हो यानी बारिश या नदी व नहर के मुफ़्त पानी से सैराब होती है तो पैदावार में उशर यानी दसवां हिस्सा ज़कात में देना फ़र्ज़ है।

2) अगर ज़मीन को ट्यूबवेल वगैरह से सैराब किया जाता है तो निस्फ़ उशर (पांच फीसद) यानी बीसवां हिस्सा ज़कात में देना फ़र्ज़ है।

खुलासा कलाम यह है कि अगर मुफ़्त से सैराब हो कर पैदावार हुई तो दसवां हिस्सा (दस फीसद) वरना बीसवां हिस्सा (पांच फीसद)।

अगर ज़मीन दोनों पानी (बारिश वगैरह और ट्यूबवेल) से सैराब हुई है तो अक्सरियत का एतेबार होगा।

फ़ुक़हा की इस्तेलाह में दोनों किस्म पर आयद होने वाली ज़कात को उशर ही के उनवान से ताबीर किया जाता है।

### निसाबे उशर

क़ुरान व हदीस के उमूम की वजह से इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैहि के नज़दीक उशर के लिए कोई निसाब ज़रूरी नहीं है, बल्कि हर पैदावार पर ज़कात वाजिब है चाहे पैदावार कम हो या ज़्यादा,

ज़कात इस्लाम के बुनियादी पांच अरकान में से एक रुकन है। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की सैकड़ों आयात में ज़कात की अदाएगी का हुकम फरमाया है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी अपने इरशादात में ज़कात की अदाएगी की ताकीद और उसकी अहमियत जिक्र फरमाई है। मौजू की अहमियत के पेशे नज़र ज़कात और अल्लाह के रास्ते में खर्च के तुम्हल्लिक जरूरी मसायल इस किताब (ज़कात और सदकात के बारे में गाइडेंस) में जमा कर दिए गए हैं।

अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ कि इन सारी खिदमात को कुबूलियत व मक़बूलियत से नवाज़ कर मुझे, ऐपस की तायीद में लेटर लिखने वाले उलमा-ए-कराम, टेक्निकल सपोर्ट करने वाले अहबाब, माली योगदान पेश करने वाले मुहसिनीन, मुतर्जिमीन, एडिटिंग करने वाले हज़रात खास कर जनाब अदनान महमूद उसमानी साहब, डिज़ाइनर और किसी भी किसम से तआवुन पेश करने वाले हज़रात को दोनों जगहों की कामयाबी व कामरानी अता फरमाये। आखिर में दारुल उलूम देवबन्द के मुहतमिम हज़रत मौलाना मुफ्ती अबुल कासिम नुमानी साहब, मौलाना मोहम्मद असरारुल हक़ कासमी साहब (मैंबर ऑफ़ पार्लियामेंट) और प्रोफेसर अखतरुल वासे साहब (लेसानियात के कमिशनर, मंत्रालय अक़लियती बहबूद) का शुक्र गुज़ार हूँ कि उन्होंने अपनी मसरूफियात के बावजूद प्रस्तावना लिखा। डॉक्टर शफाअतुल्लाह खान साहब का भी मशकूर हूँ जिनकी मेहनतों से यह प्रोजेक्ट मुकम्मल हुआ।

मोहम्मद नजीब कासमी संभली (रियाज़)

14 मार्च, 2016 ई.



खेत की ज़मीन पर कोई ज़कात वाजिब नहीं होती है चाहे जितनी कीमत की हो।

### **बटाई की ज़मीन का उशर**

जिसके हिस्से में जितनी पैदावार आएगी उसके मुताबिक उसकी ज़कात (उशर या निस्फ उशर) अदा करना ज़रूरी है, मसलन ज़मीन मालिक और खेती करने वाले के दरमियान आधी आधी पैदावार तकसीम हुई तो दोनों को हासिल शुदा पैदावार पर ज़कात अदा करना ज़रूरी है।

### **कटाई का खर्च और उशर**

पैदावार की ज़कात तमाम पैदावार से निकाली जाएगी, इसमें कर्ख वगैरह के मसारिफ शामिल नहीं किए जाते हैं, मसलन सौ कुंटल गेहूं पैदा हुए, पांच कुंटल गेहूं कटाई में और कुंटल घाहने (थेशर) में दे दिया गया तो 58 कुंटल पर नहीं बल्कि पूरी पैदावार यानी सौ कुंटल पर ज़कात अदा करनी होगी।

### **मुतफरिक् मसाइल**

— पैदावार की ज़कात में जो हिस्सा अदा करना वाजिब है मसलन एक कुंटल गेहूं तो गेहूं के बजाए अगर उसकी कीमत दे दी जाए तो भी जाएज़ है। (शामी)

— अगर रिहाइशी मकान के इर्द गिर्द या उसके सेहन में किसी फल मसलन अमरूद का पेड़ लगाया या मामूली सी खेती कर ली तो उस पर ज़कात वाजिब नहीं है। (शामी)

— हिन्दुस्तान की जमीनें आम तौर पर उशरी हैं, यानी पैदावार का दस या पांच फीसद मुस्तहिक्कीने ज़कात को अदा करना चाहिए। मौलाना अब्दुस समद रहमानी ने लिखा है कि हिन्दुस्तानी जमीनों

की कुल तेरह सूरतें हैं जिनमें से दस में लूब्स उशर या निस्फ उशर वाजिब होता है और तीन में एतियातन उशर या निस्फ उशर अदा करना चाहिए। (जदीद फिकही मसाइल - मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी साहब)

— हिन्दुस्तान की जमीनों में पैदावार पर ज़कात के सिलसिले में बाज़ उलमा का इख़्तिलाफ़ भी है, मगर कुरान करीम आयात व अहादीस के उमूम की वजह से इतियात इसी में है कि हर पैदावार का दस या पांच फीसद ज़कात के हक़दार को अदा किया जाए।

**खेती की ज़कात के मुस्तहिक्कीन भी ज़कात के हक़दार की तरह 8 हैं**

अल्लाह तआला ने सूरह तौबा आयत 60 में 8 तरह के लोगों को ज़कात लेने का हक़दार बनाया है

- 1) फकीर यानी वह शख्स जिसके पास कुछ थोड़ा माल व असबाब है, लेकिन निसाब के बराबर नहीं।
- 2) मिसकीन यानी वह शख्स जिसके पास कुछ भी न हो।
- 3) जो लोग ज़कात वसूल करने पर मुतअय्यन हैं।
- 4) जिनकी दिलजोई करना मंजूर हो।
- 5) वह गुलाम जिसकी आज़ादी मतलूब हो।
- 6) कर्ज़दार यानी वह शख्स जिसके ज़िम्मे लोगों का कर्ज़ हो और उसके पास कर्ज़ से बचा हुआ बक़दरे निसाब कोई माल न हो।
- 7) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला।
- 8) मुसाफिर जो हालते सफ़र में तंगदस्त हो गया हो।

अल्लाह तआला हमारी जानी व माली तमाम इबादतों को क़बूल फरमाए, आमीन।

## अल्लाह तआला हमसे कर्ज़ हसन का मुतालबा करता है

बावजूद कि अल्लाह तआला ही पूरी कायनात का खालिक, मालिक और राजिक है, उसीने हमें और तमाम इंसान और जिन्नात को ऋण दिया है, वही माल देने वाला और माल के ज़रिया दुनियावी ज़रूरतों को पूरा करने वाला है मगर उसका फजल व करम व इहसान है कि माल दे कर वह हमसे मुतालबा करता है कि हम उसको कर्ज़ हसन अदा करें। अल्लाह तआला ने कुरान करीम की छः आयात में बारह मकामात पर कर्ज़ का ज़िक्र फरमाया है और हर आयत में कर्ज़ को हसन के साथ बयान किया है। इन आयात में अल्लाह तआला ने कर्ज़ हसन के मुक़तलिफ बदले ज़िक्र किए हैं, दुनिया में बेहतरीन बदला, दुनिया व आखिरत में बेहतरीन बदला, आखिरत में अज़ीम बदला, गुनाहों की माफी और जन्नत में दाखिला।

कर्ज़ के मानी काटने के हैं यानी अपने माल में से कुछ माल काट कर अल्लाह तआला के रास्ते में दिया जाए तो अल्लाह तआला इसका कई गुना बदला अता फरमाएगा। मोहताज लोगों की मदद करने से माल में कमी वाके नहीं होती है बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा के लिए जो माल गरीबों, मिसकीनों और ज़रूरत मंदों का दिया जाता है अल्लाह तआला इसमें कई गुना इजाफा फरमाता है कभी जाहिरी तौर पर कभी मानवी व रुहानी तौर पर इसमें बरकत अता देता है और आखिरत में तो यकीनन इसमें हैरान कुन इजाफा होगा। हसन के मानी बेहतर, खुबसूरत और अच्छे के हैं। कर्ज़ हसन से मुतअल्लिक 6 आयाते कुरानिया हसबे जैल हैं।

कौन शख्स है जो अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दे ताकि उसे कई गुना बढ़ा चढ़ा कर वापस करे, माल का घटाना और बढ़ाना सब अल्लाह ही के इख्तियार में है और इसी की तरफ तुम्हें पलट कर जाना है। (सूरह बकरह 245) और तुम अल्लाह तआला की कर्ज़ हसन देते रहे तो यकीन रखो कि मैं तुम्हारी बुराईयों तुम से दूर कर दूंगा और तुम्हें ऐसी जिन्नतों में दाखिल करूंगा जिनके नीचे नहरे बहती होंगी। (सूरह माइदा 12) कौन शख्स है जो अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दे ताकि अल्लाह तआला उसे बढ़ा चढ़ा कर वापस करे। और उसके लिए बेहतरीन अजर है। (सूरह हदीद 11) मर्द और औरत में से जो लोग सदाकत देने वाले हैं और जिन्होंने अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दिया है उनको यकीनन कई गुना बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए बेहतरीन अजर है। (सूरह हदीद 18) अगर तुम अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दो तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ा कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ फरमाएगा। अल्लाह तआला बड़ा कदरदाँ और बर्दबार है। (सूरह तगाबून 17) और अल्लाह तआला को कर्ज़ हसन दो जो कुछ नेक आमाल तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के यहां मौजूद पाओगे वही ज़्यादा बेहतर है और इसका अजर बहुत बड़ा है। (सूरह मुजम्मिल 20)

### कर्ज़ हसन से क्या मुराद है?

कुरान करीम में इस्तेमाल हुई इस्तिलाह (कर्ज़ हसन) से अल्लाह तआला के रास्ते में खर्च करना, गरीबों और मोहताजों की मदद करना, यतीमों और बेवाओं की क़िफ़ालत करना, मुकर्रजीन के कर्ज़ की अदाएगी करना, नीज़ अपने बच्चों पर खर्च करना मुराद है गरज़

ये कि इंसानियत के काम आने वाली तमाम शकलें इसमें दाखिल हैं जैसा कि मुफस्सेरीन कुरान ने अपनी तफसीरों में लिखा है। इसी तरह कर्ज़ हसन में यह शकल भी दाखिल है कि किसी परेशान हाल शख्स को इस नियत के साथ कर्ज़ दिया जाए कि अगर वह अपनी परेशानियों की वजह से वापस न कर सका तो उससे मुतालबा नहीं किया जाएगा।

### अल्लाह ने बन्दों की ज़रूरत में खर्च करने को कर्ज़ हसन से क्यों ताबीर किया?

अल्लाह तआला ने मोहताज बन्दों की ज़रूरतों में खर्च करने को अल्लाह तआला को कर्ज़ देना करार दिया, हालांकि अल्लाह तआला बेनियाज है वह न सिर्फ माल व दौलत और सारी ज़रूरतों का पैदा करने वाला है बल्कि वह तो पूरी कायनात का खालिक, मालिक और राजिक है, हम सब उसी के खजाने से खा पी रहे हैं ताकि ह्म बढ़ चढ़ कर इंसानों के काम आएँ, यतीम बच्चों और बेवा औरतों की किफालत करें, गरीब मोहताजों के लिए रोटी कपड़ा और मकान 'क इतिज़ाम के साथ उनकी दीनी व असरी तालिमी ज़रूरतों को पूरा करने में एक ह्मारे से मुसाबकत करें, जिसकी वजह से अल्लाह तआला हमारे गुनाहों को माफ़ फरमाए, दोनों जहाँ में उसका बेहतरीन बदला अता फरमाए और अपने मेहमान खाना जन्नतुल फिदौस में मकाम अता फरमाए, आमीन।



07/09/2016

07/09/2016

### تاثرات

مصر حاضر میں دینی تعلیمات کو جدید آلاء و وسائل کے ذریعہ عوام الناس تک پہنچانا وقت کا بہت بڑا کام ہے، اللہ کا شکر ہے کہ بعض دینی، معاشرتی اور اصلاحی تحریروں نے اس مسئلے میں کام کرنا شروع کر دیا ہے، جس کے جب آج انٹرنیٹ پر دین کے حلقوں سے کافی مواد موجود ہے۔ اگرچہ اس میدان میں زیادہ تر مغربی ممالک کے مسلمان سرگرم ہیں لیکن اب ان کے نقش قدم پر چلتے ہوئے مشرقی ممالک کے علماء و اعیان اسلام بھی اس طرف متوجہ ہو رہے ہیں جن میں غز پریم ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی صاحب کا نام سر پرست ہے۔ وہ انٹرنیٹ پر بہت سادہ دینی مواد ڈال چکے ہیں، باضابطہ طور پر ایک اسلامی، اصلاحی ویب سائٹ بھی چلاتے ہیں۔ ڈاکٹر محمد نجیب قاسمی کا کلچر دس دواں ہے۔ وہ اب تک مختلف اہم موضوعات پر سینکڑوں مضامین اور کئی کتابیں لکھ چکے ہیں۔ ان کے مضامین پوری دنیا میں بڑی دلچسپی کے ساتھ پڑھے جاتے ہیں۔ وہ جدید تکنیکی سہولتوں، انقلابی واقعات، ہونے کی وجہ سے اپنے مضامین اور کتابوں کو بہت جلد دنیا بھر میں ایسے ایسے لوگوں تک پہنچا دیتے ہیں جن تک رسائی آسان کام نہیں ہے۔ موصوف کی شخصیت علوم دینی کے ساتھ علم عصری سے بھی آراستہ ہے۔ وہ ایک طرف عالم دین ہیں، دوسری طرف ڈاکٹر و محقق بھی اور کئی زبانوں میں مہارت بھی رکھتے ہیں اور اس پر مستزاد یہ کہ وہ خالق و متحرک نوجوان ہیں۔ جس طرح وہ اردو، ہندی، انگریزی اور عربی میں دینی، اصلاحی مضامین اور کتابیں لکھ کر عوام کے سامنے لا رہے ہیں، وہ اس کے لئے حسین اور مبارک ہا کے مستحق ہیں۔ ان کی شبہ اور دو کی معروضات، وجد و جہد کو دیکھتے ہوئے ان سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ وہ مستقبل میں بھی اسی مستعدی کے ساتھ مذکورہ تمام کاموں کو جاری رکھیں گے۔ میں دعا گو ہوں کہ باری تعالیٰ ان سے مزید دینی، اصلاحی اور علمی کام لے اور وہ اکابرین کے نقش قدم پر گامزن رہیں۔ آمین!

کلمہ

(مولانا) اسرار الحق قاسمی

المکمل، نوکریہ (لاہور)

صدر آل اہل حق، اہل حق، اہل حق، اہل حق

Email: asrarulhaqqasmi@gmail.com

प्रो. अरुणकुमार दास

आयुर्वेद

**PROF. AKHTARUL WASEY**  
Commissioner



भाषागत अल्पसंख्यकों के आयुक्त

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय

भारत सरकार

Commissioner for Linguistic  
Minorities in India

Ministry of Minority Affairs  
Government of India

تقریر

[illegible][illegible]

ستاروں سے آگے جہاں اور بھی ہیں

ابھی عیشی کے احوال یہ بھی ہیں

احمد علی  
(پروفیسر انجمن اسلامی)

سابقہ انگریزوں کے زیرِ قیادت مسیحی مبلغین نے آف مسزک علاقہ  
سابقہ صدر شہر مسزک علاقہ کے صدر شہر مسزک علاقہ  
سابقہ انگریزوں کے زیرِ قیادت مسیحی مبلغین نے آف مسزک علاقہ

## ज़कात के मसाइल

### ज़कात के मानी

ज़कात के मानी पाकीज़गी, बढ़ौतरी और बरकत के हैं। अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया "उनके माल से ज़कात लो ताकि उनको पाक करे और बाबरकत करे उसकी वजह से और दुआ दे उनको।" (सूरह तौबा 103) शरई इस्तेलाह में माल के उस खास हिस्से को ज़कात कहते हैं जिसको अल्लाह तआला के हुकुम के मुताबिक फकीरों, मोहताजों वगैरह को देकर उन्हें मालिक बना दिया जाए

### ज़कात का हुकुम

ज़कात देना फर्ज़ है, कुक़ान करीम की आयात और हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इरशादात से इसकी फर्ज़ियत साबित है। जो शख्स ज़कात के फर्ज़ होने का इंकार करे वह काफिर<sup>१</sup> है

### ज़कात की फर्ज़ियत कब हुई

ज़कात की फर्ज़ियत इब्तिदाए इस्लाम में ही मक्का के अंदर नाज़िल हो चुकी थी जैसा कि इमाम तफसीर इब्ने कसीर ने सूरह मुज़ज़म्मिल की आयत से इस्तिदाला फरमाया है। क्योंकि यह सूरत मक्की है और बिल्कुल इब्तिदाए वही के ज़माने की सूरतों में से है, अलबत्ता अहादीस से मालूम होता है कि इब्तिदाए इस्लाम में ज़कात के लिए कोई खास निसाब या खास मिक़दार मुकर्रर न थी बल्कि जो कुछ एक मुसलमान की अपनी ज़रूरत से बच जाता उसका एक बड़ा



जिन हज़रात को कर्ज़ हसन और सदकात दिए जा सकते हैं उनमें से बाज़ यह हैं गरीब रिशतेदार, यतीम, बेवा, फकीर, मिसकीन, सज़ल, कर्ज़दार यानी वह शख्स जिसके जिम्मा लोगों का कर्ज़ हो और वह मुसाफिर जो हालते सफर में तंगदस्त हो गया हो जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है जो माल से मोहब्बत करने के बावजूद रिशतेदारों, यतीमों, मिसकीनों, मुसाफिरों और सवाल करने वाले को दे। (सूरह बकरह 177) उनके माल में मांगने वाले महरूम का हक़ है। (सूरह जारियात 19)

## कर्ज़ हसन और अल्लाह के रास्ता में पसंदीदा चीज़ें खर्च करें

जब तक तुम अपनी पसंदीदा चीज़ अल्लाह तआला की राह में खर्च नहीं करोगे हरगिज़ भलाई नहीं पाओगे। (सूरह आले इमरान 92) ऐ इमान वालो! अपनी पाकिज़ा कमाई में से खर्च करो। (सूरह बकरह 267) जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! अल्लाह तआला ने महबूब चीज़ के खर्च करने का ज़िक्र फरमाया है और मुझे सारी चीज़ों में अपना बाग (बीरे हा) सबसे ज़्यादा महबूब है, मैं उसको अल्लाह के लिए सदका करता हूँ और उसके अजर व सवाब की अल्लाह तआला से उम्मीद रखता हूँ। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया ऐ तल्हा! तुमने बहुत ही नफा का सौदा किया। एक दूसरी हदीस में है कि हज़रत अबू तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरा बाग जो इतनी मालियत का है वह सदका है और

अगर मैं उसकी ताकत रखता कि किसी को उसकी खबर न हो तो ऐसा ही करता मगर यह ऐसी चीज नहीं है जो मछली रह सके। (तफसीर इब्ने कसीर)

इस आयत के नाज़िल होने के बाद हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु अन्हु भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और कहा कि मुझे अपने तमाम माल में सबसे ज़्यादा पसंदीदा माल खैबर की ज़मीन का हिस्सा है, मैं उसे अल्लाह ताला की राह में देना चाहता हूँ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया उसे फक्फ कर दो। असल रोक लो और फल वगैरह अल्लाह की राह में दे दो। (बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत मोहम्मद बिन मुनकिदर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो हज़रत जैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक घोड़ा जो उनको अपनी सारी चीज़ों में सबसे ज़्यादा महबूब था। (उस ज़माना में घोड़े की हैसियत तकरीबन वही थी जो उस ज़माना में गाड़ी की है) वह उसको लेकर हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि यह सदका है, हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़बूल फरमा लिया और लेकर उनके साहबजादा हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु को दे दिया। हज़रत जैद रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरा पर कुछ गिरानी के आसार ज़ाहिर हुए (कि घर में ही रहा, बाप के बजाए बेटे का हो गया) हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा सदका क़बूल कर लिया, अब चाहे इसको तुम्हारे बेटे को दूँ या किसी और रिश्तेदार को या अजनबी को। गरज़ ये कि इस आयत के नाज़िल होने के बाद

## ज़कात किस पर फर्ज़ है?

उस मुसलमान आकिल बालिग पर ज़कात फर्ज़ है जो साहबे निसाब हो। निसाब का अपनी ज़रूरतों से ज्यादा और कर्ज़ से बचा हुआ होना शर्त है, नीज़ माल पर एक साल गुज़रना भी ज़रूरी है, लिहाज़ा मालूम हुआ कि जिसके पास निसाब से कम माल है या माल तो निसाब के बराबर है लेकिन वह कर्ज़दार भी है या माल सालभर तक बाकी नहीं रहा तो ऐसे शख्स पर ज़कात फर्ज़ नहीं है।

## ज़कात का निसाब

52.5 तोला यानी 512.36 ग्राम चांदी या 7.5 तोला सोना या उसकी कीमत का नक़द रुपया या ज़ेवर या सामाने तिजारत वगैरह जिस शख्स के पास मौजूद है और उस पर एक साल गुज़र गया है तो उसको साहबे निसाब कहा जाता है। औरतों के इस्तेमाली ज़ेवर में ज़कात के फर्ज़ होने में उलमा की राय मुख़तलिफ़ हैं। चूंकि ज़कात की अदाएंगी न करने पर कुरान व हदीस में सख़्त वर्ईदें आई हैं लिहाज़ा इस्तेमाली ज़ेवर पर भी ज़कात अदा करनी चाहिए।

## ज़कात कितनी अदा करनी है?

ऊपर ज़िक्र किए गए निसाब पर सिर्फ़ ढाई फीसद (2.5%) ज़कात अदा करनी ज़रूरी है।

## समाने तिजारत में क्या क्या दाखिल हैं?

माले तिजारत में हर वह चीज़ शामिल है जिसको आदमी ने बेचने की गरज़ से खरीदा हो, लिहाज़ा जो लोग इन्वेस्टमेंट की गरज़ से

पहुंचाई जाए। लिहाज़ा सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल के लिए किसी की मदद की जाए जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरान करीम में इरशाद फरमाया "ऐ ईमान वालो! अपनी ख़ैरातको इहसान जता कर और ईजा पहुंचा कर बरबाद नह करो, जिस तरह वह शख्स जो अपना माल लोगों के दिखावे के लिए खर्च करे। (सूरह बकरह 264) जो लोग अपना माल अल्लाह तआला की राह में खर्च करते हैं फिर उसके बाद न तो इहसान जताते हैं न ईजा देते हैं उनका अजर उनके रब के पास है, उनपर न तो कुछ खौफ है न वह उदास होंगे। (सूरह बकरह 262) उन लोगों की मिसाल जो अपना माल अल्लाह तआला की रज़ामंदी की तलब में दिल की खुशी से खर्च करते हैं। (सूरह बकरह 265)

## तंगदस्ती और हाजत के वक़्त में भी अल्लाह के रास्ते में खर्च करें

क़र्ज़ हसन या सदकात के लिए ज़रूरी नहीं है कि हम बड़ी रकमही खर्च करें या इसी वक़्त लोगों की मदद करें जब हमारे पास दुनियावी मसाइल बिल्कुल ही न हों बल्कि तंगदस्ती के दिनों में भी हसबे इस्तिताअत लोगों की मदद करने में हमें कोशां रहना चाहिए"स्म कि अल्लाह तआला फरमाता है जो महज खुशहाली में ही नहीं बल्कि तंगदस्ती के मौक़ा पर भी खर्च करते हैं उनके रब की तरफ से उसके बदला में गुनाहों की माफी है और ऐसी जन्नतें हैं जिनके नीचे नहरे बहती हैं। (सूरह आले इमरान 134) जो माल से मोहब्बत करने के बावजूद रिशतेदारों, यतीमों, मिसकीनों, मुसाफ़िरो और सवाल करने वाले को दे। मुफ़स्सेरीन ने लिखा है कि माल की मोहब्बत से मुराद माल की ज़रूरत है। यानी हमें माल की ज़रूरत है, उसके बावजूद हम

दूसरों की मदद के लिए कोशिशें हैं। (सूरह बकरह 177) नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सबसे बेहतर सद्का के मुतअल्लिक सवाल किया गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया इस हाल में भी खर्च करो कि मुम्त सही सालिम हो और ज़िन्दगी की उम्मीद भी हो, अपने गरीब हो जाने का डर और अपने मालदार होने की तमन्ना भी हो। यानी तुम अपनी ज़रूरतों के साथ दूसरों की ज़रूरतों का पूरा करने की फ़िक्र करो। (बुखारी, मुस्लिम)

### खुलासा बहस

अल्लाह तआला ने माल व दौलत को इंसान की ऐसी दुनियावी ज़रूरत बनाई है कि अमूमन इसके बेगैर इंसान की ज़िन्दगी दो भर रहती है। माल व दौलत के हुसूल के लिए अल्लाह तआला ने इंसान को जाएज़ कोशिशें करने का मुकल्लफ तो बनाया है मगर इंसान की जद्दु व जिहद और दौड़ व धूप के बावजूद उसकी अता अल्लाह तआला ने अपने इखितयार में रखी है चाहे तो वह किसी के रिज़क में कुशादगी कर दे और चाहे तो किसी के रिज़क में तमाम दुनियावी असबाब के बावजूद तंगी पैदा कर दे।

माल व दौलत के हुसूल के लिए इंसान को खालिके कायनात ने यूंही आजाद नहीं छोड़ दिया कि जैसे चाहो कमाओ खाओ। बल्कि उसके उसूल व जवाबित बनाए ताकि इस दुनियावी ज़िन्दगी का निज़ाम भी सही चल सके और उसके मुताबिक़ आखिरत में जजा व सजा का फैसला हो सके। इन्हीं उसूल व जवाबित को शरीअत कहा जाता है जिसमें इंसान को यह रहनुमाई भी दी जाती है कि माल किस तरह कमाया जाए और कहा कहां खर्च किया जाए।

## ज़कात के हक़दार यानी ज़कात किस को अदा करें?

अल्लाह तआला ने सूरह तौबा आयत 60 में 8 तरह के आदमियों को ज़कात का हक़दार बताया है।

- 1) फ़कीर यानी वह शख्स जिसके पास कुछ थोड़ा माल व असबाब है, लेकिन निसाब के बराबर नहीं।
- 2) मिसकीन यानी वह शख्स जिसके पास कुछ भी न हो।
- 3) जो लोग ज़कात वसूल करने पर मुतअय्यन हैं।
- 4) जिनकी दिलजोई करना मंज़ूर हो।
- 5) वह गुलाम जिसकी आज़ादी मतलूब हो।
- 6) कर्ज़दार यानी वह शख्स जिसके ज़िम्मे लोगों का कर्ज़ हो और उसके पास कर्ज़ से बचा हुआ बक़दरे निसाब कोई माल न हो।
- 7) अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला।
- 8) मुसाफ़िर जो हालते सफ़र में तंगदस्त हो गया हो।

**वज़ाहत** - इस आयत में अगरचे सदका का लफ़ज़ इस्तेमाल किया गया है, मगर कुरान करीम की दूसरी आयात व नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अक़वाल की रौशनी में मुफ़स्सेरीन ने लिखा है कि यहां सदका से मुराद ज़कात है।

## जिन लोगों को ज़कात देना जाएज़ नहीं है

- 1) उस शख्स को जिसके पास ज़रूरियाते असलिया से ज़ायद बक़दरे निसाब माल मौजूद है।

## लेखक का परिचय

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी का तअल्लुक सम्भल (यूपी) के इल्मी घराने से है, उनके दादा मशहूर मुहद्दिस, मुक़र्रिर और स्वतंत्रता सेनानी मौलाना मोहम्मद इसमाईल सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में तकरीबन 17 साल बुखारी शरीफ का दर्स दिया, जबकि उनके नाना मुफ्ती मुशर्रफ हुसैन सम्भली (रह) थे जिन्होंने मुख्तलिफ मदरसों में इफता की ज़िम्मेदारी निभाने के साथ साथ बुखारी व हदीस की दूसरी किताबें भी पढ़ाईं।

डाक्टर नजीब कासमी ने इब्तिदाई तालीम सम्भल में ही हासिलकी, चुनांचे मिडिल स्कूल पास करने के बाद अरबी तालीम का आगाज़ किया। इसी बीच 1986 में यूपी बोर्ड से हाई स्कूल भी पास किया। 1989 में दारुल उलूम देवबन्द में दाखिला लिया। दारुल उलूम देवबन्द के क़याम के दौरान यूपी बोर्ड से इन्टरमीडिएट का इमतिहान पास किया। 1994 में दारुल उलूम देवबन्द से फरागत हासिल की। दारुल उलूम देवबन्द से फरागत के बाद जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली से B.A (Arabic) और तरजुमे के दो कोर्स किए, उसके बाद दिल्ली यूनिवर्सिटी से M.A. (Arabic) किया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली के अरबी विभाग की जानिब से मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी को "अल जवानिबुल अदबिया वल बलागिया वल जमालिया फिल हदीसिन नबवी" यानी हदीस के अदबी व बलागी व जमाली पहलू पर दिसम्बर 2014 में **डाक्टरेट की डिग्री** से सम्मानित किया गया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने प्रोफेसर डाक्टर शफीक अहमद खां नदवी भूतपूर्व सदर अरबी विभाग और प्रोफेसर रफीउल इमाद फायनान की अंतर्गत में

अरबी ज़बान में 480 पृष्ठों पर मुशतमिल अपना तहकीकी मकाला पेश किया। डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी ने बहुत सी किताबें उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी ज़बानों में तहरीर की हैं। 1999 से रियाज़(सऊदी अरब) में बरसरे रोज़गार हैं। कई सालों से रियाज़ शहर में हज तरबियती कैम्प भी मुनअक्किद कर रहे हैं। उनके मज़ामीन उर्दू अखबारों में प्रकाशित होते रहते हैं।

मौलाना डाक्टर मोहम्मद नजीब कासमी की वेब साइट ([www.najeebqasmi.com](http://www.najeebqasmi.com)) को काफी मकबूलियत हासिल हुई है जिसकी मोबाइल ऐप (**Deen-e-Islam**) तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है जिसमें मुख्तलिफ इस्लामी मौज़ूआत पर मज़ामीन के साथ उनकी किताबें और बयानात हैं।

हज व उमरह से मुतअल्लिक खुसूसी ऐप (**Hajj-e-Mabroor**) भी तीन ज़बानों (उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी) में है, जिन से सफर के दौरान हत्ताकि मक्का, मिना, मुज़दल्फा और अरफात में भी इस्तिफादा किया जा सकता है।

हिंदुस्तान और पाकिस्तान के मशहूर उलमा, दीनी इदारों और मुख्तलिफ मदरसों ने दोनों Apps (**दुन्या की पहली मोबाइल ऐपस**) की ताईद में खूत तहरीर फरमा कर अवाम व खवास से दोनों Apps से फायदा उठाने की अपील की है।

<http://www.najeebqasmi.com/>

[najeebqasmi@gmail.com](mailto:najeebqasmi@gmail.com)

[MNajeeb Qasmi - Facebook](#)

[Najeeb Qasmi - YouTube](#)

Whatsapp: [00966508237446](tel:00966508237446)

First Islamic Mobile Apps on the world in 3 languages:

**Deen-e-Islam & Hajj-e-Mabroor**



करते जा रहे हैं और उनको अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते उन पर अल्लाह ने जो फरीज़ा आयद किया है उसको अदा नहीं करते, उनको खुशखबरी सुना दीजिए कि एक दर्दनाक अज़ाब उनका इंतज़ार कर रहा है।

फिर दूसरी आयत में उस दर्दनाक अज़ाब की तफ़सील ज़िक्र फरमाई कि यह दर्दनाक अज़ाब उस दिन होगा जिस दिन सोने और चांदीको आग में तपाया जाएगा और फिर उस आदमी की पेशानी, उसके पहलू और उसकी पुशत को दागा जाएगा और उससे यह कहा जाएगा कि यह है वह खज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया था, आज तुम खज़ाने का मज़ा चखो जो तुम अपने लिए जमा कर रहे थे। अल्लाह तआला हम सबको इस अंजामे बद से महफूज़ फरमाए, आमीन।

एक हदीस में नबी अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब माल में ज़कात की रक़म शामिल हो जाए यानी पूरी ज़कात नहीं निकाली बल्कि कुछ ज़कात निकाली और कुछ रह गई तो वह माल इंसान के लिए तबाही और हलाकत का सबब है, लिहाज़ा इस बात का एहतेमाम करो कि एक एक पाई का सही हिसाब करके ज़कात अदा करो।

### **ज़कात से मुतअल्लिक़ चंद अलग मसाइल**

ज़कात जिसको दी जाए उसे यह बताना कि यह माल ज़कात है ज़रूरी नहीं बल्कि किसी गरीब के बच्चों को ईदी या किसी और नाम से दे देना भी काफी है।

दीनी मदारिस में गरीब तालिब इल्म के लिए ज़कात देना जाएज़ है।